



Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W8LS20721	ImageGroup:	I8LS20729
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	སངས་རྒྱས་བསྟན་འཛིན་རིན་པོ་ཆའི་མཛད་རྣམ་ངོ་མཚར་དད་པའི་ས་བོན། sangs rgyas bstan 'dzin rin po che'i mdzad rnam ngo mtshar dad pa'i sa bon/
Author:	n/a
Descriptor:	n/a
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	Darjeeling
Publisher:	Sakya Guru Monastery
Date:	2005
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at M/S Satluj Infotech Images, E-45, Sector 27 Noida, District Gautam Buddha Nagar, U.P. 201301 via New Delhi, IN for the Tibetan Buddhist Resource Center, 150 17th st., New York, NY 10011, U.S.A 2006.

130072

130072



༡༡། །ས་སྐྱ་མཁན་ཆེན་སངས་ཀྱས་བཞུན་འཛིན་རིན་པོ་ཆའི་
མཛད་ནུས་འོ་མཆར་དད་པའི་ས་བོན་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།

H. E. Sakya Khenchen Sangay Tenzin

"mZed rNam Ngo-mTshar dad-pa'i Sa-bon"



བཟད་བྱའི་མའི་ཆོས་གསེང་གླེབས་མི་རིག་གླིང་ཆལ་དུ་མགྲོན་པའི་སྐུ་པར། (1987)

SAKYA GURU MONASTERY

Ghoom, Darjeeling (W.B.) India

Tibetan Version Composed & Edited by Venerable Jampa Tenzin
(Secretary Sakya Guru Monastery)
and

Lobpon Chenyang Gyatso (Sakya College)
Shedup Tenzin (Lecturer, Dept. of Indo-Tibetan Studies, Visha Bharati
University, Shantiniketan)

English Version Translated and Edited
by Professor N. Jimpa (St. Joseph's College, Dj.),
Lama Tenzin Dhargyal (Shastri-Sarnath)
Ms. Tanya Zivkovic (P.R.S. Adelaide University, Australia)
Sonam Dorjee Pasang, (Tibetan Parliamentary & Policy Research Centre)
New Delhi.

Published by
SAKYA GURU MONASTERY,
Sakya Ladrang Bridge
P.O.Ghoom - 734 102
Dist. Darjeeling (W.B.) INDIA
Phone: (0354) 2274393 Telefax : (0354) 2274610

1st edition - 2005, 500 copies.

Printed & Typeset at
Printing Dept., Tibetan Refugee Self Help Centre, Darjeeling. Ph: 0354-2255938

༡༩༨༦ ལོར་གནས་མཆོག་དོ་ཨེ་གདན་དུ་ཡགོང་ས་ཡུལ་ས་མགོན་ཆེན་པོར་ཀ་མ་ལ་
 བྱེ་ལའི་སྒོ་མ་རིམ་གསུང་ཆོས་ཐུལ་སྐབས་ཀྱི་སྒྱུ་པར།



14th Dalai Lama with Khenchen Sangay Tenzin at Bodh Gaya Monastery,
 Private Residence of His Holiness the 14th Dalai Lama
 Photo taken at the time of Khenchen Sangay Tenzin's teaching on the
Uncommon Three Different Stages of Meditation (Kamala Shila Gom Rim).
 1986.



༡༥། དྲོད་གླིང་གུམ་ས་རྒྱ་གུ་ཅུད་གོན།

SAKYA GURU MONASTERY

Ghoom, Darjeeling (W.B.)

Phone: (0354) 2274393

Telefax : (0354) 2274610

Sakya Ladrang Bridge

P.O. Ghoom - 734 1

Dist. Darjeeling
(W.B.) INDIA

ཕྱིན་བཅོམ་།

[illegible]

༡༠༠༥ ཕྱི་མ་ ༡༡ ཚེས་ ༡༩ དགེ་བར་སྤྱར་བའོ།



- | | | |
|-----|--|-----|
| ༡༽ | སྐྱབ་ལྷམས་པའི་ཚུལ། | ༡ |
| ༢༽ | མདོ་སྐགས་རིག་གནས་ལ་གསན་བསམ་མཛད་ཚུལ། | ༢ |
| ༣༽ | གདན་ས་ཆེན་པོ་དཔལ་ལྷན་ས་སྐྱར་མཆན་བཞེས་མཛད་ཚུལ། | ༣ |
| ༤༽ | སྐགས་ཕྱོགས་ལ་གསན་བསམ་མཛད་ཚུལ། | ༤ |
| ༥༽ | སྐྱབ་པ་མཛད་ཚུལ། | ༥ |
| ༦༽ | གདན་ས་མཛིན་ཚུལ། | ༦ |
| ༧༽ | བསྐྱན་བཅོས་ཚུལ། | ༧ |
| ༨༽ | འཆད་སྤེལ་མཛད་ཚུལ། | ༨༠ |
| ༩༽ | རྟེན་བཞེངས་མཛད་ཚུལ། | ༩༣ |
| ༡༠༽ | བྱིས་སྐྱབ་ཚུལ། | ༩༩ |
| ༡༡༽ | གསུང་རྟེན་བཞེངས་ཚུལ། | ༡༠༤ |
| ༡༢༽ | སྐྱབ་པ་སྤེལ་ཚུལ། | ༡༠༤ |
| ༡༣༽ | སྐྱ་ཆེ་འདིའི་མཛད་པ་མཐའ་མ་ཇི་ལྟར་བསྐྱས་ཚུལ། | ༡༡༥ |
| ༡༤༽ | ཞར་བྱང་ཡང་སྤྱད་རིན་པོ་ཆེ་ངོས་འཛིན་ལུ་ཕྱོགས་སྟོར། | ༡༡༦ |



མཁའ་འགྲུ་མཆོག་གི་མཁའ་འགྲུ་མཆོག་གི་མཁའ་འགྲུ་མཆོག་

H. Khenchen Sangay Tenzin

༡༡། །བཀའ་དྲིན་མཚུངས་ཆེ་མ་མཆིས་པ་གསུམ་ལྟན་དེ་ཇི་

འཛིན་པ་ཆེན་པོ་སྒྲིམ་བཅུན་དམ་པའི་ངོ་བོར་

བཞེངས་པ་བྱང་ཕྱོགས་ཐུབ་པའི་རྒྱལ་ཚབ་

དམ་པ་བཅུ་ཆེན་བསྟན་པའི་སློག་གིང་

མཁན་ཆེན་དེ་ཇི་འཆང་སངས་རྒྱས་

བསྟན་འཛིན་དཔལ་བཟང་པོ་མཆོག་གི་

མཛད་ནུམ་ངོ་མཆར་དད་པའི་ས་བོན་

ུ ུ ུ ུ ུ ུ ུ ུ

ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་

སྟོ།

༣༠༠༥

ས་གཅད་དང་པོ་སྐྱ་བཏུམས་པའི་ཚུལ་ནི།

དམ་པ་གང་ཉིད་སྐྱ་བཏུམས་པ་ནས་བརྒྱུད་ནི་བར་མ་གཤེགས་
བར་གྱི་གསང་གསུམ་མཛད་འཕྲིན་ཚུར་མཐོང་གི་སྒོ་ས་ཇི་བཞིན་དཔགས་པར་
མི་རྒྱས་ཀྱང་། དེ་ཞིག་ཐུན་མོང་འདུལ་བུའི་སྤང་ངོའི་མཛད་སྒྲིང་ནམས་སྒྲིང་
བར་སྒྲོ་བ་བཏུས། དེ་ཡང་སྒོ་གཤིས་སྒྲིང་ལུག་པའི་རྒྱ་རུ་མི་འགོ་བའི་སྤང་དོན་
གྱི་སྒྲིང་པོ་འདྲིལ་ནས་འགོད་པ་ལ་ཐོག་མར་གང་དུ་སྐྱ་བཏུམས་པའི་ཚུལ་ནི།
བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱི་ མདོ་ལས། ཡི་གེ་ས་དང་ཀ་ཞེས་པ། དང་པོར་རབ་དྲ་
གྲགས་པར་འགྱུར། ཞེས་དང་། འང་མ་མགོན་ཐུ་མ་ས་པན་གྱིས། དགེ་
ལེགས་ཡོན་ཏན་སྒྲིང་པའི་ས། སྤྲིག་པ་རྩི་མ་སྤང་བྱིར་སྐྱ། ཞེས་གསུངས་
པ་ལྟར་འཕགས་ལུལ་ནི་རྩི་གདན་ནས་དཔག་ཚད་བརྒྱ་བཅོད་པའི་གནས་ཁྱད་
པར་ཅན་གངས་ཅན་པོད་གྱི་དོན་རྩི་གདན་དཔལ་ལྷན་ས་སྐྱར། བྱི་ལོ་ ༡༧༠༩
པོད་རབ་བྱུང་བཅོ་ལྔ་ཤིང་འབྲུག་ལོར་མཆན་ལྟས་བཟང་པོ་དང་བཅས་སྐྱ་
བཏུམས་ཤིང་། དགྲུང་གུངས་དགྲུ་པ་བར་ཡབ་ཡུམ་ལྷན་དུ་བཞུགས། དགྲུང་
གུངས་བརྒྱ་པར་སོན་སྐབས་ཐུབ་བཏུན་ལྟ་ཁང་ཆེན་མོའི་མཁན་རིན་པོ་ཆེ་རིན་
ཆེན་རྒྱལ་མཆན་མཆོག་ལས་དགེ་ཚུལ་གྱི་བསྐྱབ་པ་ནས་ཏེ་ཆོས་སྒོར་དབྱུ་བཞུགས་
གནང་། དེ་རྩིས་དཔོན་སྒྲོ་བ་ཡོངས་འཛིན་དུ་བཞུན་གནང་མཛད་དེ། ཆོས་
སྒྲིང་གྱི་རིམ་པ་ནམས་ལྷ་ཆེན་གྱི་བཅའ་བྲིམས་གཞིར་བརྒྱུད་མཁན་པོ་བྲི་བས་

མཛད་རྣམས་འོ་མཆར་དད་པའི་ས་པོན་

གཙོས་དགེ་ཆོས་སོགས་དབུ་འཛིན་ནམ་པའི་སྐྱ་མདུན་དུ་རྒྱགས་འབུལ་མཛད་
དེ་མཆོན་སྟན་གྱི་གྲགས་པ་ཐུགས་ཀྱན་དུ་བྱལ་འགོ་བཙམས།

ས་གཙང་གཉིས་པ་མདོ་རྒྱགས་རིག་གནས་བཙས་ལ་གསན་བསམ་མཛད་ཚུལ་ནི།

ཐོག་མར་སློབ་དཔོན་ཆོས་ལོད་ཟེར་དུང་ནས་བསྐྱས་གྲ་དང་།
རིགས་ཆུང་། རིགས་འབྲང་། རིགས་ཆེན་སོགས་གསན་བསམ་གནང་བ་དང་
། དེ་ནས་ཐུབ་བརྟན་ལྟ་ཁང་ཆེན་མོའི་བཤད་གྲ་དང་། རོར་ཆེན་དོ་རྩེ་འཆང་
ཆེན་པོའི་གདན་ས་རོར་ཨེ་ཆོས་ལྡན། ཀྱན་མཁྱེན་རོང་སྟོན་ཆེན་པོའི་གདན་
ས་འཕན་པོ་ན་ལེ་རྒྱར། བསམ་ཡས་མི་འགྱུར་རྒྱན་གྱིས་གྲུབ་པའི་གཙུག་ལག་
ཁང་། ཉ་ནག་ཐུབ་བརྟན་ནམ་རྒྱལ་སྤྱིང་། པོ་དོང་། བྱ་གཤོངས། ཀྱན་མཁྱེན་
སངས་རྒྱས་འཕེལ་གྱི་གདན་ས་འབྲས་ཡུལ་སྦྱེད་མོས་ཆལ་སོགས་སུ་གྲགས་ཆེན་
བཙོ་བརྟན་སོགས་ལ་ལུང་ཙམ་འཛིན་པའི་ཟེར་སློབ་ཀྱི་རྩེ་ས་སུ་མི་འབྲངས་བར་
རིགས་པའི་ལམ་ནས་དགོངས་དོན་དཔྱིས་ཕྱིན་པར་མཛད་དེ་གསན་བསམ་རྒྱ་
མཆོའི་ཕ་རོལ་དུ་སོན། གཞན་ཡང་མདོ་རྒྱགས་གཞུང་ལུགས་རབ་འབྱམས་
སྐྱ་པའི་མངའ་བདག་བྲག་གཡལ་མཁན་ཆེན་ཐུབ་བརྟན་བཟང་པོ་མཆོག་གིས་
གཙོས་མཁས་པ་དུ་མའི་ཞབས་ལ་བཏུད་དེ། མདོ་དང་རྒྱུད་ཀྱི་བསྐྱས་པའི་བཀའ་
བརྟན་སྦྱི་དང་བྱེ་བྲག་པལ་མོ་ཆེར་མཁས་པའི་བྱ་བ་ནམ་གསུམ་གྱིས་མཛད་པ་

བསྐྱེད་པའི་དགུང་གྲངས་ ༡༥ ལོར་ན་ལེན་རྒྱུ་དཔལ་ལྡན་ས་སྐྱེའི་ལྷ་ཁང་མཁན་
 ཆེན་དོན་གྲུབ་ཡར་འཕེལ་ལས་བརྒྱད་པའི་ལྷ་ཆེན་ལྷོ་མ་རྒྱན་འབྲུལ་མེད་ལྷན་
 པ་གཟིམ་ལོག་མཆོག་སྤུལ་དོན་རྩི་འཆང་གིས་མཁན་པོ་དང་། ཅེ་གདོང་རིན་པོ་
 ཆེས་ལས་སློབ་མཛད་དེ། དགེ་འདུན་འདུས་པའི་དབུས་སུ་བསྐྱེད་ཆོག་གས་ཀྱི་
 ལྷོ་མ་པ་བཞེས་གིང་། དུས་དེ་ནས་བརྒྱུད་བདག་ཅག་གི་སྟོན་པས་བཅས་པའི་
 ཉིས་བརྒྱ་ལྷ་བརྒྱུ་ཅ་གསུམ་གྲངས་ཅན་གྱི་འདུལ་བྲིམས་ནམས་རང་གི་མིག་འབྲས་
 བཞིན་བསྐྱེད་པར་མཛད།

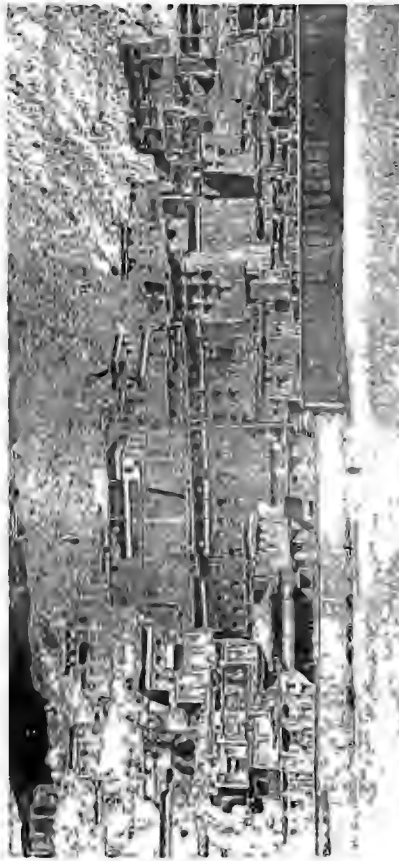
ས་གཙང་གསུམ་པ་གདན་ས་ཆེན་པོ་དཔལ་ལྡན་ས་སྐྱེར་མཆོན་བཞེས་མཛད་ཆུ་ལ་ནི།

གདན་སའི་ཕྱག་ལེན་བཞིན་ལྷོ་མ་གསུམ་ཁ་སྐྱོང་གིས་གཙོས་བཀའ་
 པོད་བརྒྱ་རྒྱལ་འབྲུལ་སོགས་ཀྱིས་སྟོན་པ་བཀའ་བརྒྱུ་པའི་མཆོན་བཞེས་མཛད་
 ཅིང་། དེ་ནས་པོད་ཆེན་རྒྱལ་ལ་དམ་བཅའ་དང་། གྲགས་ཆེན་བཙོ་བརྒྱད་ལ་
 མཐའ་དབུད་སོགས་མཛད་པས་མཁས་པའི་ཡང་ཅེར་སོན་ཏེ། ལྷ་བས་དེར་ས་
 སྐྱ་གཞུང་ནས་ལེགས་དར་དང་གནང་སྦྱོན་སྒྲགས་གཞུང་ལུགས་རབ་འབྲུམས་
 སྤྱོད་པའི་མཆོན་སྟོན་གསོལ།

ས་གཙང་བཞི་པ་སྤྲུགས་ཕྱིགས་ལ་གསལ་བསམ་མཛད་པའི་ཚུ་ལ་ནི།

དགྲ་གངས་བཞི་བཅུ་ལོར་དཔལ་ས་སྐྱའི་གདན་ས་ཆེན་པོར་
ཡའཁོན་རིགས་ཡ་སྐྱབས་མགོན་ངག་དབང་ཀྱན་དགའ་བསྟན་པའི་ཁྱལ་མཚན་
རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གི་ཞལ་སྤྲུགས་གསུང་ངག་ལམ་འབྲས་ཆོགས་བཤད་དབང་ལུང་
མན་ངག་བྲིད་བཅས་གསལ། བྱད་པར་ངོར་ཁང་གསར་བྱ་བྱང་གི་མཁན་ཆེན་
མཁས་དང་གྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ། དམ་པ་དྲི་རྩེ་འཆང་ཆེན་པོ་མཆོག་
གི་ཞལ་སྤྲུགས་དཔལ་ལྷན་ས་སྐྱའི་ཟབ་ཆོས་རྒྱུད་སྡེ་བདུན་ཅུ་ཅ་གཉིས་དབང་
ལུང་མན་ངག་བྲིད་བཅས་དཔལ་ལྷན་ས་སྐྱའི་གདན་ས་གསང་སྤྲུགས་བདེ་ཆེན་
མེད་དུ་གསལ་བཞེས་མཛད། སྐར་ཡང་མཁན་ཆེན་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཞལ་སྤྲུགས་གདན་
ས་ལོག་མ་ཅེ་གདོང་སྤྲོད་གསུམ་རྣམ་ཁྱལ་མེད་དུ་ཟླ་བྱུག་རིང་རྒྱུད་སྡེ་ཀྱན་བདུས་
སུ་གྲགས་པ་དང་། ལྷགས་རི་ལས་མི་འདའ་བའི་གསེར་ཆོས་བཅུ་གསུམ། གྲར་
ཞལ་རྣམ་གཉིས་སོགས་ཆོས་སྦྱོང་གི་སྒོར་རྣམས་གསལ་བཞེས་མཛད། གཞན་
ཡང་ངོར་ཁང་གསར་ཞབས་དུང་བདེ་བར་གསལ་པ་བསྟན་འཛིན་སྟོང་པོའི་
ཞལ་སྤྲུགས་དཔལ་ས་སྐྱའི་སྒྲོལ་མ་པོ་བྱང་དུ་སྐྱབ་ཐབས་ཀྱན་བདུས་སུ་གྲགས་
པ་པོ་ད་བཅུ་བཞི་དབང་ལུང་མན་ངག་བྲིད་བཅས་གསལ་བཞེས་དང་། གཞན་
ཡང་ཟབ་ཆོས་དམར་པོ་སྒོར་གསུམ་སོགས་དབང་གི་ལྷ་རྣམས་དང་མགོན་དཀར་
ཡིད་བཞིན་ཞོར་བུ་སོགས་ཞོར་ལྟའི་སྒོར་རྣམས་གསལ་བཞེས་མཛད། དབུས་

མཛད་རྣམ་ངོ་མཚར་དད་པའི་ས་པོན་



1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

Chun KuanDuk Gwator is the first lineage of Khon Family of the Saligians in the year 4173. He founded the great Sakya Monastery North of Salva. There after the more monasteries were founded by subsequent lineage holders.

Photo taken before the destructive Chinese Cultural Revolution in Tibet.

གཙང་ཁམས་གསུམ་གྱི་ལྷ་མ་རིས་སུ་མ་ཆད་པའི་ཞལ་སྤྲུལ་ནས་ཟབ་ཆོས་དང་མན་
 དག་ལུང་རྒྱན་དགོན་རིགས་ནམས་བྱགས་ཁྲར་ཆེ་བཞེས་ཀྱིས་གསན་པས་མཛད་
 པ་དང་། གྲེས་འཕྱོར་དུ་ཕེབས་ནས་ཀ་སྤྲུག་དུ་སྤྲུང་བ་ལྟར་པའི་གཙུག་རྒྱན་
 ལ་སྐབས་ཇེ་བདུད་འཛོམ་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གི་ཞལ་སྤྲུལ་ནས་རྟིང་མའི་རིན་ཆེན་
 གཏེར་མཛོད་སོགས་གསང་སྤྲུགས་རྟིང་མའི་ཆོས་སྒྲོར་མང་པོ་གསན། དེ་ནས་
 གུམ་དགོན་ཡིད་དག་འཆོས་མྱིང་དུ་སྐྱབ་ཆེན་བཀའ་བརྒྱུད་ཀྱི་དབང་ལུང་མན་
 དག་ཁྲིད་བཅས་གསན་པ་མཛད་དོ། ༡༩༢༧ ལོར་གནས་མཆོག་སྤྱི་ལོ་
 སེར་རིགས་དང་དཀྱིལ་འཁོར་རྒྱ་མཚོའི་ཁྲབ་བདག་ལ་སྐབས་མགོན་ལགོར་མ་
 བདག་ཁྲི་དོ་ཇེ་འཆང་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་ཞལ་སྤྲུལ་ལམ་འབྲས་ཆོགས་བཤད་
 ཆ་ལག་བཅས་པ་དང་། ཁྲད་པར་ ༡༩༤༠ ལོར་དཔལ་ལྷན་ས་སྐྱ་པའི་རྟེན་
 གཞི་མདགོན་བྱབ་བརྟན་ནམ་རྒྱལ་མྱིང་དུ་བྱན་མོང་མའིན་པའི་ལམ་འབྲས་སྒྲོབ་
 བཤད་ཆོས་སྒྲོར་ཡོངས་སུ་ཇོགས་པར་གསན། སྐབས་དེར་ལ་སྐབས་མཆོག་
 ལ་བཙུང་བརྒྱུད་ཁྲི་ཆེན་རིན་པོ་མཆོག་དང་ལ་སྐབས་ཇེ་འོར་ཁྱ་ལྷིང་མཁན་རིན་པོ་
 ཆེ་ནམ་གཉིས་ཀྱི་དྲུང་ནས་ཀྱང་བཀའ་ཆོས་དུ་མ་གསན།

༡༩༤༥ ལོར་སྤྱི་ལོ་ནམ་འབྲེན་དམ་པ་ལགོར་ས་ལ་སྐབས་མགོན་
 རྒྱལ་པའི་དབང་པོ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་ཅིང་གཟིགས་པ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་ཞལ་སྤྲུལ་
 ནས་གནས་མཆོག་དོ་ཇེ་གདན་དུ་དཔལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་དབང་ཆེན་དང་། ལྷན་

རས་གཟིགས་ཀྱི་དབང་ཆེན་སོགས་མང་དུ་གསན། དེ་རྗེས་བཞུགས་སྐར་རྩ་
 རམ་ས་ལར་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་དབང་ཆེན་དང་། རྩ་མ་ཐུ་བཅུ་པ། རྩོམ་
 པ་ཉི་ཤུ་པ་བཅས་ཀྱི་ཐུགས་ལུང་། གསང་འདུས་ཐུགས་རིམ་ཆེན་མོ་སོགས་
 གསན་བཞེས་མཛད།

ས་གཙང་ཐུ་པ་སྐྱབ་པ་མཛད་པའི་ཚུལ་ནི།

ཐོག་མར་གདན་སར་དཔལ་ཕྱག་ནི་དེ་རྗེས་འབྲུང་པོ་འདུལ་བྱེད་ཀྱི་གཞི་
 བསྟེན་དང་། རྗེ་བཙུན་གྲགས་པ་རྒྱལ་མཆོན་གྱི་སྐྱབ་གནས་ཁྱད་པར་ཅན་བྱས་འགྱུར་
 རྗེས་བྲག་རྩུ་དཔལ་གྱི་དོ་རྗེའི་གཞི་བསྟེན་དང་། མགོན་པོ། སྒྲོལ་དཀར། ཆོ་
 དཔག་མེད་ཀྱི་གཞི་བསྟེན་སོགས་མཛད། དེ་རྗེས་གངས་མཁའ་པའི་གཙུག་རྒྱུ་ཆོས་
 རྗེས་པའི་སྐྱབ་གནས་སུ་ས་འཇམ་སྐགས་སྐྱབ་བསྟེན་མཆོམས་དང་འབྲེལ་གནས་དེར་
 དཔེ་མཆོམས་ལའང་རྒྱུན་རིང་བཞུགས། དེ་ནས་དོར་ཨེ་ཤྩོ་ཆོས་སྡེ་དང་། ན་ལེན།
 བསམ་ལས། གཡའ་མ་ལུང་། འབྲས་ཡུལ་སྡེད་མོས་ཆོལ་སོགས་སུ་མཁའ་སྡོད་མ་
 སོགས་ཀྱི་གཞི་བསྟེན་དང་། སྐས་ཡུལ་ཁན་པ་ལུང་གི་འདབ་རྩེ་ལ་ཁུམ་བུ་སྟེར་པོ་ཆེར་
 གསེར་ཆོས་བཅུ་གསུམ་གྱི་ནང་ཆུན་རིག་བྱེད་མ་སོགས་ཀྱི་བཙན་རྒྱ་མཛད་པས་སྐྱབ་
 པ་ཉམས་བཞེས་སྐབས་ཉམས་རྟོགས་དོད་ཉམས་གཟིགས་སྐྱང་དུ་མ་བྱུང་བ་ནི་མས་གསང་
 སྒྲོག་མི་མཛད་པས་གཞན་དུ་མཁྱེན་པར་འགྱུར་རོ།

ས་གཅད་དུག་པ་གདན་ས་འཛིན་པའི་ཚུལ་ནི།

མཁས་ཤིང་གྲུབ་པའི་བདག་ནི་དངོས་མཁན་ཆེན་དམ་པ་དོན་རྒྱུ་
འཆང་ངག་དབང་མོ་གོས་གཞན་པན་སྟིང་པོའི་བཀའ་སླུ་པོའི་རྒྱན་དུ་བཅིངས་
གནང་གིས་དངོས་ཨེ་ཧྲི་ཆོས་ལྡན་དུ་བཤད་གྱའི་མཁན་པོ་ལོ་གསུམ་རིང་མཛད།
དེ་ནས་ཀུན་མཁྱེན་མཁས་པའི་དབང་པོ་གོ་བོ་རབ་འབྱམས་པའི་གདན་ས་རྟ་ནག་
ཐུབ་བསྟན་རྣམ་སྒྲིང་དུ་བཤད་གྱའི་མཁན་པོ་ལོ་བཙོ་ལྔ་མཛད་ཅིང་། ༡༧༥༧
ལོར་རྒྱ་ཁྲོ་དམར་པོས་བོད་ལ་དུག་གོན་མི་བཟད་པ་བྱས་ཀྱིན་ཡུལ་གྱི་རྩ་བ་ས་
བཞེད་ཡོད་ཀྱང་རྒྱ་དམག་གིས་བོད་ས་ཡོངས་རྫོགས་མཐའ་བསྐྱར་ཡོད་ཀྱིན་
ཐེབས་ལམ་དཀའ་བ་ཡོད་ནའང་། རུབ་གཅིག་གཟིམ་ལམ་འོད་གསལ་དུ་དཔལ་
ས་སྒྲིའི་ལྷ་ཆེན་ཚུལ་མོ་སྟེ་ལ་གཟིམ་རྒྱུ་ཡིན་པ་ལ་དེའི་ནང་འཛིམ་པ་ལས་
བཞེངས་པའི་སྐུ་བརྟན་ཆེ་ལེགས་ཁ་ཤས་ཡོད་པའི་ནང་ནས། གུ་རུ་རིན་པོ་ཆེ་
སྣང་སྟིང་ཟིལ་གོན་གྱི་གསེར་ཞལ་དངོས་སུ་མཛལ་བ་དམིགས་ཏེ་ཆོག་བདུན་
གསོལ་འདེབས་ཆགས་མེད་བྱས་ན་ལྟོ་རྒྱབ་སྟིང་པོའི་ཡུལ་དུ་བསྐྱེབས་ཐུབ་བཅས་
ལུང་བསྟན་གནང་བ་དང་། མནལ་སད་ནས་ཐུགས་དགའ་ཡེ་ལེ་བའི་ངང་ཉམས་
སྣང་ཞིག་བྱུང་སྟེ་སྔ་དྲོ་ནམ་དུངས་པ་དང་ཞབས་སྟེ་རྣམས་ལ་དེ་ལྟར་ཆོ་འགྲོ་
ཆས་སྒྲིག་ན་ཐར་པ་འདུག ང་ལ་གུ་རུ་རིན་པོ་ཆེས་གསུང་བྱོན་བྱུང་། ཐེ་ཆོ་མ་
མི་དགོས། མོ་ཐག་བཅད་ནས་འགྲོ་རྒྱ་ཡིན་ཞེས་གསུངས། དེ་ནས་ཆིབས་རྟ་

སྐྱེལ་གྱི་སྒྲིག་ལུས་ཏེ་སྟོན་འཁོར་ཅན་བསྐྱེད་པ་ཅས་པོད་ཤུང་བརྒྱད་འགྲེམས་
 ཏེ། ཐེབས་ལམ་ཡུལ་གྲོང་འགའ་ཤས་སུ་རྒྱ་དམར་གྱིས་བོད་མི་འཛིན་བཟུང་
 དང་། འཐབ་འཛིང་བྱེད་བཞིན་ཡོད་པའི་སྐད་ཅིར་བོས་པ་དང་། མིག་མཐོང་
 ཤུང་པའི་ཉེ་འཁྲིར་ལམ་གཞུང་ནས་ཐེབས་བཞུད་གནང་དགོས་ཤུང་ནའང་སྒྲིབ་
 གཡོག་གིས་བསྒྲིབས་པ་ལྟར་རྒྱ་མིས་མ་མཐོང་བར་གོར་ས་སྒྲོ་ཡུལ་ས་མཆམས་
 སུ་གུང་ཐང་ལ་མོར་གུ་རུ་རིན་པོ་ཆེ་སྟོ་རྒྱབ་སྟེན་ཡུལ་དུ་གཤེགས་སྐབས་ནི་ལ་
 ཞབས་རྗེས་འཛིག་གནང་ས་དེར་འགྱོར་སྐབས་སྐར་གྱི་གུ་རུ་རིན་པོ་ཆེའི་ལུང་
 བཞུན་དེ་ཐུགས་དྲན་གསོས་ཏེ། སྤྱན་ཆབ་བསེལ་ཞིང་། བཞུན་པ་དང་སེམས་
 ཅན་གྱི་དོན་དུ་ཐུགས་སྟོན་རྒྱ་ཆེ་མཛད། དེ་ནས་སྒྲོ་ཡུལ་དུ་ས་དགོན་ཁག་གཅིག་
 གིས་བཞུགས་འཇགས་ཡོང་བ་ཞུས་ཀྱང་། སྐབས་དེར་ཀ་སྤྱག་དུ་ལྷ་སྐབས་མགོན་
 བདུད་འཛོམས་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གིས་གཏོར་མཛོད་གསུང་ཆོས་གནང་གཏུན་
 འཁེལ་བར་བརྟེན་སྒྲོ་ཡུལ་ནས་ཤར་ཐེབས་མཛད། ༡༩༦༡ ལོར་དོར་སྤྱིང་གུམ་
 ས་དགོན་དུ་ཞབས་སོར་འཁོད་ཅིང་། ལྷ་སྐབས་མགོན་ལགོང་མ་བདག་ཁྱི་དོ་
 རྗེ་འཆང་ཆེན་པོ་མཆོག་གིས་མཁན་པོ་གནང་དགོས་པའི་བཀའ་ལུང་ཐེབས་པ་
 ལྟར་སྐར་སྤྱིལ་མཁན་པོའི་ཁྱི་འདོན་མཛད་སྟོ་གནང་སྟེ་དུས་དེ་ནས་བཟུང་དགོན་
 པར་བཞུན་པའི་རྩ་བ་དམ་ཆོས་འདུལ་བའི་ཉམས་ལེན་གཞི་གསུམ་འཇུགས་གནང་
 སྟེ་ད་ལྟའི་བར་རྒྱན་ཆགས་སུ་ཡོད་པ་དང་། ལྷག་པར་དུ་ ༡༩༧༩ ལོར་བཤད་

བྱ་དབྱ་འཇུགས་གནང་ནི་ཀུན་དགའ་བཤད་སྒྲུབ་མིང་ཞེས་མཆན་གསོལ་མཛད་
 ཅིང་། དགོངས་པ་ཆོས་དབྱིངས་སུ་ཐིམ་ཚུལ་མ་བཞེས་པར་བཀའ་དྲིན་བསྐྱངས་
 ཤིང་། ལྷག་པར་དུ་འང་སེར་སྒྱ་མི་མང་དང་། ཞར་བྱང་དུ་ཀ་དོར་བྲལ་བཅའ་
 སྡོད་ས་སྒྱུ་ཆོས་སྒྱིད་བཅས་པའི་སྒྲུབས་ཡུལ་དང་བླང་དོར་བཀའ་སློབ་ཟབ་བསྐུལ་
 སོགས་བྱུགས་འཁུར་ཆེན་པོས་བཀའ་དྲིན་བསྐྱངས་པ་བཅས་སོ། །

ས་གཙང་བདུན་པ་བརྟན་བཅོས་ཚོམ་པའི་ཚུལ་ནི།

རྗེ་བླ་མ་བྱབ་བརྟན་བཟང་པོའི་ཞལ་གདམས་སྒྱི་པོའི་རྒྱན་དུ་བཟུང་
 གནང་གིས་ཆོས་རྗེ་ས་པཏ་གྱི་གསུང་སྡོམ་གསུམ་རབ་དབྱེ་དང་། ཀུན་མཁྱེན་
 གོ་རམ་པས་མཛད་པའི་སྡོམ་གསུམ་ཁ་སྐྱོང་། གཞན་ཕན་སྤིང་པོས་མཛད་པའི་
 སྡོམ་གསུམ་འཇམ་དབྱངས་བླ་མའི་དགོངས་རྒྱན་བཅས་ལ་མཆན་འགྲེལ་མཛད།
 བླར་ཡང་རིགས་བརྒྱ་བྱབ་བདག་ངོར་མཁན་ཆེན་དོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོའི་ཞལ་
 གདམས་དབྱུ་མ་འཇུག་པའི་སྒྱོར་རྒྱུ་ཀ་དང་། གཞན་ཡང་དབྱུ་མ་འཇུག་པ། དབྱུ་
 མ་བཞི་བརྒྱ་པ། བཤེས་སྤྱིང་། ཆད་མ་རིགས་གཏེར། འདུལ་བ་མདོ་རྩ་སོགས་
 ལ་འང་མཆན་འགྲེལ་མཛད། དེ་རྗེས་དབྱར་སྤྱི་ཕྱི་དག་ཐེར་དང་། ལེགས་པར་
 བཤད་པའི་རིན་པོ་ཆའི་གཏེར་གྱི་འགྲེལ་པ། ལྷན་ངག་ལེའུ་བར་པ་དོན་རྒྱན་
 སོ་ལྟའི་དཔེར་བཞིན། གཞན་ཡང་གསུང་ཐོར་བུ་འཇམ་མགོན་བླ་མར་གསོལ་

འདེབས་ཀྱས་བསྐྱུས། ལྷ་ཆེན་མཁན་པོའི་སྡོམ་རྒྱན། གདུང་རབས་རིམ་བྱོན་
 གྱི་བརྒྱད་འདེབས་ཁ་སྐོང་། ཆོས་སྦྱོང་གུར་ལུ་ལྷ་མ་བྲལ་གྱི་གཏོར་བསྡེ་དང་བསྐྱང་
 བསྐྱུས། རྗེ་བརྩན་ནི་རྗེ་ནལ་འབྱོར་མའི་ཆོགས་མཆོད། མགོན་དཀར་ཡིད་
 བཞིན་ནོར་བུའི་ཆོགས་མཆོད། བསྡེ་བ་སྡོན་ལམ་བསྐྱེད་ཀྱས་སོགས་བསྐྱེད་
 བཅོས་མཁས་ཀྱན་ཡིད་དབང་འཕྲོག་པའི་ལེགས་བཤད་ནམས་སྟིགས་དུས་སྦྱོ་
 པོའི་གཅེས་ནོར་དུ་འཛོག་གནང་མཛད། །

ས་གཅད་བརྒྱད་པ་འཆད་སྟེ་ལ་མཛད་པའི་རྩལ་ནི།

ཐོག་མར་ངོར་མཁན་ཆེན་ནི་རྗེ་འཆང་གི་བཀའ་དགོངས་བཞིན་
 ངོར་བཤད་གྲུར་སོར་མདོ་དང་། སྦྱོང་འཇུག་དབུ་མ། བར་བྱིན། སྡོམ་
 གསུམ་སོགས་གཞུང་ཆེན་ཁག་འཆད་སྟེ་ལ་མཛད། དེ་ནས་རྟ་ནག་བྱུང་བསྐྱེད་
 ནམ་བྱལ་གླིང་བཤད་གྲུར་གཞུང་ཆེན་བཤད་ཁྲིད་དང་། མཁན་ཆེན་ངག་ཆོས་
 ཀྱིས་མཛད་པའི་པོད་ཆེན་དུག་དང་། ཁྱད་པར་རྗེ་བརྩན་གོང་མ་ནམས་ཀྱི་གསུང་
 སྐོར། རིག་གནས་སྐོར་སྟན་ངག་སུམ་རྟགས་དག་ཡིག་སོགས་གང་ལ་གང་འདུལ་
 གྱི་སྟོན་མཆོད་སྟེ་ལ་མཛད། དེ་རྗེས་དོར་གླིང་གུམ་ས་དགོན་དུ་གདན་ས་མཛད་
 དེ་སེར་རྒྱ་མཚོག་འབྲིང་དམན་གསུམ་ལ་དབང་ལུང་མན་ངག་དང་ལས་འབྲས་
 མང་དོར་གྱི་གདམས་པ་བཟང་པོ་ཡང་ནས་ཡང་དུ་སྟོལ་གནང་མཛད་ཅིང་། བཤད་

བྱིད་དང་། བཤད་ལུང་། དཀའ་གནད་ནམས་གང་ཟག་གི་རྒྱུ་ཚོད་དང་བསྟན་
 ནས་བཀའ་འདི་ན་གྱིས་ཆོས་པར་མཛད། དེའི་བར་དཀའ་དུས་པོར་གཞུང་གི་བཀའ་
 དགོངས་ལྟར་སྤྲུག་ས་ཆོས་སྤར་དུ་ས་དགེ་བཀའ་རྩིང་གི་རིས་སུ་མ་ཆད་པའི་དགེ་
 འདུན་ནམས་ཀྱི་མཁན་པོར་ཕེབས་ཏེ་གཞུང་ཆེན་ཁག་འཆད་སྟེལ་དགོས་པ་ནམས་
 བཀའ་དགོངས་བཞིན་མཛད། དེ་ནས་མ་སུ་རི་དང་ཅ་མཆོག་གྲོང་སོགས་སུ་
 གདན་ས་གསུམ་སོགས་ཀྱི་རིས་མེད་མཁན་པོ་ནམས་དང་མཉམ་ཕེབས་ཀྱིས་ཕན་
 བདེའི་འབྲུང་གནས་རྒྱལ་བསྟན་རིན་པོ་ཆེ་མི་ཉམས་གོང་སྟེལ་མཛད་ཚུགས་བཀའ་
 བསྟར་ཞུ་སྟོན་ནམས་ལེགས་གྲུབ་བློན་རྗེ་ས་སྤར་རྒྱ་མཐོ་སྟོབ་དབུ་ཚུགས་སྐབས་
 རྒྱ་གཞུང་མཁན་པོ་མཛད། དེ་རྗེས་རང་དགོན་དུ་ཞབས་སེར་འཁོད་དེ་གྲུ་མང་
 དང་། ལྷག་པར་བཤད་གྲུར་གཞུང་ཆེན་སྟོན་གསུམ་ནམ་གསུམ་དང་། དབུ་
 མ་ཅ་འདུག་བཞི་གསུམ། དར་ཆད་འདུལ་མངོན་སོགས་དང་མཁན་ཆེན་ངག་
 ཆོས་གསུང་པོད་ཆེན་དུག་གིས་གཙོས་རྒྱ་པོད་མཁས་གྲུབ་རིམ་བྱོན་གྱི་གསུང་
 འཆད་ཐབས་ཀྱི་མན་ངག་སྒྲ་ཆོགས་སྟེང་ནས་གོ་བདེར་དཀྱོལ་ཏེ་བཀའ་འདི་ན་བསམ་
 བཅོལ་ལས་འདས་པ་བསྐྱངས། གཞན་ཡང་སྟན་བརྒྱུད་རྒྱ་མཆོའི་མཛོད་འཛིན་
 རྩེ་བཅུན་ལ་བཙོ་བརྒྱུད་བྲི་ཆེན་དེ་རྗེ་འཆང་མཆོག་ལ་ཡང་རྗེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་
 གསུང་སྟོན་གསུམ་མཆན་འབྲེལ་ཐོག་ནས་འབུལ་གནང་མཛད། ལྷག་པར་ལགོང་
 ས་ལ་སྐབས་མགོན་ཆེན་པོ་ལྷ་མིའི་ནམ་འདྲེན་དམ་པར་བཤད་རྒྱུ་དང་ཡུང་རྒྱུ་

ཤིན་ཏུ་དགོན་པ་ཀ་མ་ལ་ཤི་ལའི་སྒྲོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དང་། ལྷ་
 ལས་ལུལ་བྱུང་གི་བསྟོན་པ། བྱད་པར་འཕགས་བསྟོན། རིགས་གཏེར་རང་
 འགྲེལ། རྗེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྒྲོམ་གསུམ་རབ་དབྱེའི་མཆན་འགྲེལ་སོགས་
 འབུལ་གནང་མཛད་པས་སྒྲ་ཆེན་རྣམས་དང་ཕན་ཚུན་སྒྲ་སྒྲོ་བ་ཐ་མི་དད་པའི་འབྲེལ་
 བས་ཐུགས་བརྩེ་བྱ་ན་མེད་པར་མཛད། གཞན་ཡང་དབལ་ས་སྐྱའི་བརྟན་གཞི་
 མ་དགོན་བཤད་གྲ་དང་། ས་སྐྱ་མཐོ་སྒྲོ་བ། རྒྱུ་ཕུར་ས་སྐྱ་ཆོས་སྒྲར་སོགས་
 ལ་ཡང་འཇམ་མགོན་སྒྲ་མའི་གསུང་ཐུབ་པ་དགོངས་གསལ་གྱིས་གཙོས་གཞུང་
 ཆེན་ཁག་དང་། བཤད་རྒྱན་དང་ཡུང་རྒྱན་དགོན་རིགས་རྣམས་ཤི་ལྟར་གསོལ་
 བ་བཏབ་པ་བཞིན་བཀའ་བྲིན་བསྟུལ་ཏེ་བརྩེ་ཆེན་བརྟན་པའི་ཉི་མ་ཆེས་ཆེར་གསལ་
 བར་མཛད་པ་ལགས་སོ། །

ས་གཙང་དགུ་པ་ཉེན་བཞེངས་མཛད་པའི་རྩལ་ནི།

ར་སྐྱབས་མཆོག་ཁིང་གསེགས་གང་དེས་རྣམ་ཀུན་ཐུགས་འདུན་
 ཅེ་གཅིག་ཏུ་གཏད་སའོས་རྗེ་ས་སྐྱ་པ་རྒྱུད་ཆེན་པོའི་སྤང་བརྟན་བྱིན་རྒྱལ་གྱི་
 གཟེ་པོད་འབར་བཞིག་སྒྲོན་ནས་བཞེངས་བསྐྱུན་མཛད་ཟིན་པ་དེ་ད་ལྟའང་གཟིམ་
 རྒྱུད་ཏུ་བཞུགས་ཡོད། དེ་རྗེས་ ༡༩༩༠ ལོར་སྒྲར་ཡང་པོད་གཞུང་ཉེན་བཞེངས་
 བཟོ་གྲུར་བཀའ་མངགས་གྱིས་ཆོས་རྗེ་ས་པའི་སྤང་བརྟན་བཟོ་བཀོད་ཐུན་སུམ་

ཆོགས་པ་ཞལ་གངས་བརྒྱ་དང་ཨ་བརྒྱ་ཐམ་པ་གསར་བཞེངས་མཛད་ནས་ནང་
 བཞུགས་གཟུངས་དང་། ཞལ་གསེར། ན་བཟའ་རང་འགྲིག་གངས་བརྒྱ་ཐམ་
 པ་བཅས་ ༡༩༥༠ ལོར་དཔལ་ས་སྤྱི་བརྟན་གཞི་མ་དགོན་ཐུབ་བརྟན་ནམ་
 རྒྱལ་གླིང་དུ་སྦྱོར་ཙམ་འབུལ་གནང་མཛད་པ་དང་། དེ་ནས་ཡལོང་ས་ཡ་སྤྱབས་
 མགོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་ཅིང་གཟིགས་པ་ཆེན་པོ་མཆོག་དང་། ཡ་སྤྱབས་མགོན་
 ཡལོང་མ་བདག་ཁྱིའི་དྲེ་འཆང་ཆེན་པོ་ནམ་གཉིས་ཀྱིས་གཙོས་རིས་མེད་ཐ་སྤུལ་
 ཁག་ལ་ཡང་རིམ་འབུལ་མཛད་དོ། །

ས་གཙད་བརྒྱ་པ་ཤིས་སྤྱི་བཞེངས་ཚུལ་ནི།

འཇམ་མགོན་ཐ་མའི་ཞལ་ཐང་དང་། སྦྱོལ་དཀར། དམར་པོ་
 སྒོར་གསུམ། རིག་ཕྱེད་མ་བཅས་ཀྱི་གསེར་ཐང་། གནས་བརྟན་བརྒྱ་དུག་གུར་
 མཆོག་གཙོ་བཞུགས་ཀྱི་ཆོས་སྤྱང་ཡོངས་ཤོགས་དང་། སངས་རྒྱལ་དྲེ་འཆང་
 གཙོ་བཞུགས་ཀྱི་ལམ་འབྲས་ཐ་བརྒྱད། མཁའ་སྦྱོད་ཐ་བརྒྱད། མགོན་པོའི་ཐ་
 བརྒྱད་བཅས་ཀྱི་ཆོགས་ཞིང་། དོར་གླིང་གུམ་ས་དགོན་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་སྤེལས་
 རིས་ལ་མཉམ་མེད་གྲུའི་རྒྱལ་པོ་གཙོ་འཁོར་གསུམ། འཕགས་ཡུལ་གྱི་པཎ་གྲུབ།
 རིས་སུ་མ་ཆད་པའི་གངས་ཅན་མཁས་གྲུབ་རིམ་བྱོན་གྱི་སྤྱང་བརྟན། ཆོ་ལྷ་ནམ་
 གསུམ་བརྒྱ་ཆར་སོགས་བཞེངས་གནང་མཛད་དེ་དད་རྟེན་མཆོད་སྦྱིན་དུ་སྦྱོས།

ས་གཙང་བཙུ་གཅིག་གསུང་ནི་ན་པའི་ངས་ཚུ་ལ་ནི།

འཇམ་མགོན་ལྷ་མའི་གསོལ་འདེབས་དཔར་གིང་དང་། རྩོམ་གསུམ་རབ་དབྱེའི་མཆན་འགྲེལ་དཔར་གིང་། སྤྱིས་ཀྱི་གར་དུ་ཐེབས་ནས་དབུ་མ་འཇུག་པའི་སྒྲོར་རྒྱུ་རྩོམ་གསུམ་ཁ་སྐོང་། འཇམ་དབྱངས་ལྷ་མའི་དགོངས་ཀྱིན་མཆན་འགྲེལ། ས་སྐྱེ་ལེགས་བཤད་ཅེ་འགྲེལ་སོགས་དཔར་བསྐྱེན་བཀའ་དྲིན་ཆེ་བ་དང་། གཞན་ཡང་ཕྱག་དཔེ་མང་པོ་ཐབས་འཛོལ་དཔེ་བསྐྱེན་གནང་བ་རེ་རེ་ནས་ཞུ་ཐབས་མ་མཆིས་སོ། །

ས་གཙང་བཙུ་གཅིག་སྒོ་བ་མ་སྤེལ་པའི་ཚུ་ལ་ནི།

ཡསྐབས་ཇེ་དམ་པ་དེ་ནི་ད་ཀྱི་གསུང་ལས་སྐྱེས་པའི་བརྟན་པའི་གསལ་བྱེད་སྒོ་བ་མའི་ཆོགས་ཀྱང་མཁས་གིང་གྲགས་ཆེ་བ་མང་དུ་བྱོན་པ་ལས་མཆོན་བྱེད་ཅམ་བོད་ན། བོད་ཀྱི་ལྷ་ན་མེད་པའི་དབུ་ཁྲིད་སྒྲིལ་མོར་ཡོད་པ་ཡསྐབས་མགོན་ཆེན་པོ་མཆོག་དང་། དཔལ་ས་སྐྱེ་ཕུན་ཆོགས་པོ་བྱང་གི་བདེ་བར་གཤེགས་པ་ཡསྐབས་མགོན་འདུལ་འཇིན་ངག་དབང་ཀྱན་དགའ་སྤོན་ལས་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་དང་། ཡསྐབས་ཇེ་བཙོ་བཙུན་ཁྲི་ཆེན་རིན་པོ་ཆེ། སུད་སི་དགེ་བཤེས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལ་མཆན་རིན་པོ་ཆེ། གདོང་ཐོག་བརྟན་པའི་ཀྱིལ་མཆན་རིན་པོ་ཆེ། གསང་ཆེན་བརྟན་པའི་གསལ་བྱེད་ཤར་ཁུམ་བུ་སྤེང་ཆེ་སྤེལ་སྤྱོད་

མཇུག་རྣམ་པོ་མཆར་དང་པའི་ས་པོན་

རིན་པོ་ཆེ། གྲོ་སྒྲོན་ཐང་གི་མཁན་པོ་བཀྲ་ཤིས་བསྟན་འཛིན། གསེར་མདོག་
 ཅན་པ་དགེ་བཤེས་བསྟན་འཛིན་ལྷན་གྲུབ་དང་། སྤར་རྒྱུ་མཁན་ཟུར་བཀྲ་
 ཤིས་བཟང་པོ་ལགས་སོགས་བཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལུང་རྟོགས་ཀྱི་བསྟན་པ་རིན་
 པོ་ཆེ་འཛིན་སྐྱོང་སྟེ་ལ་གསུམ་གྱི་སྒྲོན་ས་རིས་སུ་མ་ཆད་པ་བསྟན་པར་རྒྱབ་ས་ཆེན་
 གྱི་མཛད་རྗེས་འཛིན་གནང་བཞི་དེང་གི་ཆར་ཀྱན་གྱིས་མཐོང་ཆོས་སུ་གྱུར་པ་
 འདི་ལྟར་ལགས་སོ། །

ས་གཙང་བཙུག་གསུམ་སྐྱེ་ཆེ་འདིའི་མཛད་པ་མཐའ་མ་དེ་ལྟར་བསྟན་སྐྱོང་བཞུགས་ཆུ་ལ་ནི།

དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་སྒོ་མ་གསུམ་དང་། འཆད་ཅོད་ཅོམ་གསུམ།
 མཁས་བཙུན་བཟང་གསུམ་སྟེ་དམ་པའི་ཆུ་ལ་དགའི་ཡོན་ཏན་གྱི་པ་མཐར་སོན་
 ཞིང་རེ་ཞིག་སྐྱེ་བའི་བར་གཤེགས་པའི་དགོངས་པ་བྱགས་ལ་མངའ་བའི་ཆེ་ཐ་མལ་
 སྤང་ཞེན་གྱི་རྟོག་པ་བྱུང་སྟེ། རིམ་གཉིས་བྱུང་མེད་ཅུང་ཁོ་ན་ལ་བྱགས་
 གཏད་ཅིང་། དགྲའ་གངས་བརྒྱུད་ཅུ་གྲུ་བདུན་ལོར་རྣམ་ཀྱན་དང་མི་འདྲ་བར་
 སྐྱེ་ཐང་ཆད་པའི་ཆུ་ལ་ཅུང་བཞེས་ཏེ་རྒྱུན་གྱི་ཞལ་འདོན་ལ་དུས་ལུན་རིང་
 ཅོམ་བཞུགས། ཉེ་གནས་ཀྱིས་སྟོན་གསེང་ཞུས་ཀྱང་ཅང་མི་གསུངས་པ་བྱགས་
 དམ་ཉམས་བཞེས་ཁོ་ན་མཛད། མཐར་ ༡༩༧༠ ལྷ་བ་ ༡༡ ཆོས་ ༡༡ དང་
 ། བོད་རྒྱལ་ལོ་ ༡༡༡༧ ལྷགས་ཏེ་ལྷ་ ༩ ཆོས་ ༣༩ རེས་གཟའ་ཉི་མའི་ཐོ་

རེངས་ཀྱི་ཆར་བདག་ཅག་གདུལ་བྱ་རྟག་འཛིན་ཅན་རྣམས་ཆོས་ལ་བསྐྱལ་བའི་
 ཟུར་རེ་ཞིག་དགོངས་པ་ཆོས་དབྱིངས་སུ་གཤེགས་ཚུལ་བསྟན་ནས་སྟེ་ཟླ་ ༡༡
 ཆོས་ ༡༧ བོད་ཟླ་ ༡༠ ཆོས་ ༡ བར་ཉིན་དགའི་རིང་ཐུགས་དམ་འོད་
 གསལ་ངང་བཞུགས་ཤིང་། སྐབས་དེར་ཐུགས་དམ་གྲོལ་མིན་གསང་ཆེན་བསྟན་
 པའི་མངའ་བདག་ཆེན་པོ་ཡུལ་པ་མེ་བྱ་བྲལ་རིན་པོ་ཆེ་སངས་ཀྱས་དོན་དེ་འཆང་
 མཆོག་གིས་མཉམ་བཞག་ཏིང་པེ་འཛིན་གྱིས་སྟོན་ནས་ལྟ་བུའི་གཟིགས་སྤངས་ཀྱིས་
 བརྟག་པ་མཛད་ཅིང་། ཟུ་ཆོས་ ༡༧ དང་། བོད་ཆོས་ ༡ ཉིན་སྤྱོད་ཀྱི་
 ཆོད་ ༧ པའི་ཐོག་ཐུགས་དམ་གྲོལ་རྟགས་སུ་བྱང་སེམས་དཀར་དམར་ལས་
 དཀར་པོ་ཐུགས་ཆེར་བྱོན། དགོན་པ་དང་ཟླ་བྱང་གི་ཐད་ཀར་འཇའ་འོད་གྱིས་
 གུར་ཕུབ། ཐུགས་དམ་བཞུགས་ཡུན་དེའི་རིང་ལ་གཟིམ་ཆུང་གི་སྟེ་ནང་བར་
 གསུམ་དུ་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་དྲི་བཟང་ཐུལ་བསོགས་ཀྱན་གྱིས་མཐོང་ཆོས་སུ་གུར་
 ཏེ། བྲ་ཆང་གི་དབུ་ལས་གཙོས་ཉེ་གནས་སྐྱེ་ཉེ་བཅས་པས་འཕགས་པའི་རང་
 རྟགས་དངོས་སུ་བསྟན་པར་མཁྱེན་ནས་དད་པའི་སྒྲུ་ལོང་དབང་མེད་དུ་གཡོས།
 ཐུགས་དམ་གྲོལ་འཕྲལ་གསོལ་འདེབས་དང་། སྟན་མེང་། གདུང་ཁྲུལ། བུར་
 ཁང་གི་ས་ཆོག་འཆར་འགོད་གནང་སྟོལ་ངས་ཇོགས་ཡུལ་པ་མེ་བྱ་བྲལ་རིན་
 པོ་ཆེ་མཆོག་གིས་མཛད། གདུང་ཆས་ཀྱི་བཀོད་པ་ལོངས་སྟོན་ཇོགས་པའི་ཆ་
 ཐུགས་སུ་མཛད་དེ་བྱུང་འཕྲལ་བྱ་བྲལ་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་ནས་སྟོན་ཞེ་དང་ལྟ་རེ་ག་

བྱང་མཛོད་ཀྱིས་མདུན་བསུས། སེར་མེད་དུང་རྒྱ་ལོལ་སེལ་སོགས་མདོར་ན་
 མཛོད་རྩལ་སྒྲ་ཆོགས་ཀྱིས་སྐྱ་གདུང་རིན་པོ་ཆེ་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་གདན་ཞུས་
 གནང་སྟེ་བཞུགས་ཁྲིར་འཁོད་པ་དང་ལས་བསྐྱེད་ཀྱི་བྱ་བུ་ལ་རིན་པོ་ཆེ་མཛོག་གིས་
 གསུང་ཆོག་སྦྱར་དངོས་རྩལ་གསུམ་ཆོག་ཡོངས་རྫོགས་བསྐྱེད་སྤྱོད་ཀྱི་ཉིན་
 ཕྱིད་གཉིས་རིང་སེར་སྐྱ་མི་མང་དང་ལྷན་ཡོངས་ལ་གདུང་མཇལ་བཏང་། ཕྱི་
 ཟླ་ ༡༡ ཚེས་ ༡༡ དང་། བོད་ཟླ་ ༡༠ ཚེས་ ༩ ཉིན་སྤྱོད་ལྷོ་ཆོད་ ༩
 པའི་ཐོག་ལས་བསྐྱེད་ཀྱི་བྱ་བུ་ལ་རིན་པོ་ཆེ་མཛོག་དབུས་དགེ་འདུན་ཡོངས་ནས་སྐྱ་
 གདུང་ཕྱར་ཁང་དུ་གདན་ཞུས་གནང་སྟེ་ལས་བསྐྱེད་ཀྱི་བྱ་བུ་ལ་རིན་པོ་ཆེ་དབུ་
 བཞུགས་ཆོག་གྲས་དཔལ་འདོན་རྩལ་དཔའི་སྒྲོ་ནས་སྐྱེན་སྟེག་དང་འདི་གའི་
 འདུས་སྐྱེས་དཔལ་ཀྱན་རིག་ནམ་སྤང་གི་ཆོག་བཅས་ཀྱི་སྒྲོ་ནས་སྐྱ་གདུང་རིན་
 པོ་ཞུགས་འབུལ་ཞུས་ཤིང་། ཞག་བདུན་ཕྱག་གཅིག་རིང་ཉིན་ལྟར་མཛོད་འབུལ་
 དང་འབྲུལ་གསོལ་ཞུས། དེ་རྩལ་ཕྱར་ཁང་སྒྲོ་ཕྱི་སྐྱབས་གདུང་རུས་ལ་གྱུ་རུ་
 རང་ཕྱོན་དང་། སེན་རྒྱ་ར། གདུང་ཁ་མདོག་སྒྲ་ལ། ཕྱིན་ཐིག་རིང་
 བསྟེལ། དབུ་ཐོད་ཞུགས་མ་བཞེས་པ་སོགས་དད་ལྷན་སྐྱེ་པོ་རྒྱལ་སྤྱི་ཡིད་འོར་
 མཇལ་རྒྱ་བྱུང་བ་སྟེ་གདུལ་བྱའི་སྐྱེ་པོར་ཐར་པའི་ས་བོན་བདེ་སྐྱེད་བསྐྱེད་པར་
 མཛད། སྐྱ་གདུང་ཞུགས་འབུལ་གྱི་སྐྱབས་གྲུབ་མཐའ་སྒྲོགས་པའི་རྟགས་སུ་
 བཅུ་མཁའ་གཡའ་དག་པ་དང་། ས་གཞི་རྩལ་དག་པ་བྱུང་ཞིང་། གཞན་དོན་

མཐར་ཕྱིན་པའི་རྟེན་འབྲེལ་དུ་འོད་ཟེར་སྒྲ་ཆོག་གསུམ་གསུམ་བཅུར་འཕྲོ་བའི་འཇམ་
 སྒྲིན་དང་། ཞིང་བཀོད་ཀྱི་རི་མོ་གིན་ཏུ་རྣམ་པར་བཀྲ་བ་དང་། ལྷ་ཡི་དབང་
 པོ་དང་འཇིག་རྟེན་སྦྱིང་བ་བཞིའི་མཆོད་འོས་སུ་གྱུར་པའི་རྟེན་གསུ་གདུང་ཁ་
 མདོག་སྒྲ་ལྔ་ཤོན། ཁྱད་པར་ཡི་དམ་དགུས་པ་ནི་རྗེའི་སྐུ་མདོག་དང་མཐུན་པར་
 གདུང་ཕྱིན་ཐིག་དང་། རིང་བསྐྲེལ་ཡལ་ཆེར་ཁ་མདོག་སྒྲ་པོ་ཤོན་པ། རྗེ་
 བཅུན་ནི་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་རྟེན་གསུ་གདུང་རུས་ལ་སིན་རྒྱ་
 ར་ཤོན།

འགྱུར་བ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་བརྟེན་པའི་རྟེན་གསུ་གདུང་
 རུས་ལ་གྱུ་རུ་རང་ཤོན་ཡོད་པ་སོགས་མདོར་ན་བྱ་སྒྲོ་བ་དད་ལྷན་རྣམས་ཀྱི་རྟེན་
 སྐལ་དུ་རིང་བསྐྲེལ་འབྲེལ་མེད་འཇོག་གནང་མཛད་པ་ལས་གདུང་དང་རིང་བསྐྲེལ་
 ཡལ་ཆེར་གསེར་གདུང་རིན་པོ་ཆེའི་ནང་གཟུངས་སུ་བཞུགས་སུ་གསོལ། དེ་
 མིན་རིང་བསྐྲེལ་ཕན་བྱ་ཞིག་གདུང་རྟེན་མངལ་རྒྱུར་བཞུགས་ཡོད།

ས་གཙང་བཅུ་བཞི་པ་ཞར་བྱུང་དུ་ཡང་སྟིད་རིན་པོ་ཆེ་ངོས་འཛིན་ཞུ་ཕྱོགས་དང་
 སྒྲོ་བ་གཉེར་གནང་ཚུལ་སྟོར་ནི།

གྲུ་ཆང་ནས་རིམ་པར་ལྷ་སྐབས་རྗེ་ཞིང་ག་གེགས་དམ་པ་མཁན་
 ཆེན་སྐུ་གོང་མའི་སྐུ་གདུང་རབ་གནས་སྐབས་ལྷ་སྐབས་མགོན་ས་སྐུ་ལ་གོང་མ་

བདག་ཁྱིའི་དེ་འཆང་ཆེན་པོ་མཆོག་ལ་ཡང་སྲིད་ཐེབས་མིན་བཀའ་བསྟར་ཞུས་
 པ་བཞིན་བསྟན་དང་འགྲོ་བའི་དགོས་མཁོར་གཞིགས་ཏེ་བདག་པ་བགྱིས་འབྲས་
 སུ་ད་ལྟའི་ཡང་སྲིད་རིན་པོ་ཆེ་འདི་ཉིད་འབྲུལ་མེད་ཡིན་པའི་བཀའ་ལུང་བསྟུལ་
 ཏེ། སྤར་ཡང་འབྲུལ་མེད་ཡིན་མིན་གསོལ་འདེབས་ནན་ཞུས་ཕུལ་བ་བཞིན།
 དེ་རྗེས་དགོངས་པ་གཅིག་མཐུན་དུ་མགོང་ས་ལསྟབས་མགོན་ལྷ་མེད་རྣམ་འདྲན་
 དམ་པ་མཆོག་གིས་ཀྱང་བདག་འབྲས་སུ་དེ་ཉིད་རང་ངོས་འཛིན་མཛད་དེ་མཆོན་
 བསྟན་འཛིན་ཀྱན་དགའ་ཀྱུལ་མཆོན་རིན་པོ་ཆེ་ཞེས་མཆོན་གསོལ་ཅིང་གཙུག་ཕྱད་
 སོགས་ལགོང་ས་ལསྟབས་ཀྱུལ་བའི་དབང་པོ་མཆོག་གིས་བཞེས། དེ་ནས་རྒྱ་ཡུར་ས་
 རྒྱ་ཆོས་སྤར་དུ་གདན་ཞུས་ཀྱི་ཁྱིའི་འདོན་མཛད་སྒོ་དང་པོ་བསྐྱེད་ས། ༡༩༠༧༥༡༡
 ལོར་ཉིད་ཀྱི་གདན་ས་གུམ་གུ་རུ་ས་རྒྱ་དགོན་པར་ཁྱིའི་འདོན་ཟབ་རྒྱས་ཞུས་ཤིང་
 ། ཉིད་ཀྱི་གདན་སར་བཞུགས་ཡུན་ཤིན་ཏུ་ཐུང་ཡང་ཆོས་སྦྱོང་དང་ཆོག་ཕྱག་
 ལེན་སོགས་ཆོགས་མེད་བདེ་ལྷག་ཏུ་མཁྱེན་ཏེ་ཆབས་ཆེན་གྱི་མཛད་པ་འཛོག་གནང་
 མཛད་ཅིང་། ༡༩༠༡༥༡༡༣ ཉིན་ཕྱག་སྦྲིལ་ལྟར་ལད་པལ་ངན་སོང་སྦྱོང་རྒྱད་
 ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཀྱན་རིག་རྣམས་སྤང་ཆེན་མེད་ཕྱག་ལེན་ཡོངས་ཇོགས་རྒྱགས་འབུལ་
 གནང་། ༡༩༠༣༥༡༡༠ ཉིན་དཔལ་ཆེན་དོ་རྗེ་གཞོན་ནུའི་ཕྱག་སྦྲིལ་འདོན་
 བསྟུལ་མཛད། ད་ལྟའི་ཆར་རིམ་སྲིག་གཙུག་ལག་སྦྱོབ་གཉེར་ཁང་དུ་སྦྱོབ་གཉེར་
 ལ་འབད་འབྲུངས་གནང་བཞིན་པ་ལགས་སོ།། །

བཀའ་མཁན་ཅིས་པའི་བདེ་བར་གཤེགས་པ་ས་སྐྱ་མཁན་ཆེན་སངས་རྒྱལ་བསྐྱེད་འཛིན་རིན་པོ་ཆེ།
 ས་སྐྱ་འི་ལ་ཤོང་མ་གདུང་སྐུ་འཕྲུལ་བཟོ་རིན་པོ་ཆེ།
 ལ་སྐྱ་བས་མཐོན་ས་སྐྱ་ལ་ཤོང་མ་བདག་ཁྱིའི་རིན་པོ་ཆེ།
 ས་སྐྱ་འི་ལ་ཤོང་མ་གདུང་སྐུ་འཕྲུལ་བཟོ་རིན་པོ་ཆེ།
 ༡༩༩༧ ལོར་རྫོང་གྲིང་གྲུ་ས་སྐྱ་དཔོན་པར་ཆིབས་བསྐྱར་སྐབས།



From Left:

- 1 H.E. Sakya Khenchen Sangay Tenzin Rinpoche
- 2 H.H. Sakya Ghongma Dung'se Ratna Vajra Rinpoche
- 3 H. H. the Sakya Trizin Rinpoche
- 4 H.H. Sakya Ghongma Dung'se Gyatna Vajra Rinpoche

Taken 'n1987 during auspicious visit to the
 Sakya Guru Monastery, Ghoom.



༡༩། རྟོག་གྲིང་གུམ་ས་སྐྱ་གུ་རུ་དགོན།

SAKYA GURU MONASTERY

Ghoom, Darjeeling (W.B.)

Phone: (0354) 2274393
Telefax: (0354) 2274610
Sakya Ladrang Bridge
P.O.Ghoom-734 102
Dist. Darjeeling
(W.B.) INDIA

FORWORD

This brief inspiring life story of H. E. the late Sakya Khenchen Sangay Tenzin Rinpoche, spiritual teacher of H.H. the 14th Dalai Lama, has been made possible with the collection of his available written works from our monastery's archives.

It was our fervent wish to publish a complete volume of the written works and commentaries on the different aspects of Buddhism encompassing the four major schools of Tibetan Buddhism by the late Khen Rinpoche. But due to certain unforeseen circumstances, this project has not yet seen the light of day. We are however, in the process of compiling his entire work and very soon hope to take out a publication.

Fortunately, with the initiative and active interest by our well acquainted friend in the Dharma, Miss Tanya Zivkovic, a Research Fellow from Adelaide University, Australia, it has been made possible to print this first edition. Without her financial contribution and devotion, we would not have been able to publish this book. For this we are profoundly grateful to her.

Keeping in mind the classic scholastic achievements of H.E. the late Sakya Khenchen Sangay Tenzin Rinpoche involving Teachings, Debating and Writings etc. and with incomparable kindness, possessing the three vows of Bodhichitta, he has emanated immense inspiration to all the Buddhist devotees and saw the overall flourishing of the seed of the great Dharma.

The 14th day of the ninth month of the Wood Rooster year according to the Tibetan Lunar Almanac corresponds to 14th November, 2005. This day is observed as the anniversary of the Parinirvana of the founder of the Guru Sachen Kunga Nyingpo lineage.

In order to gain merit and blessings as well as to propagate the divine deeds of H.E. the late Sakya Khenchen Sangay Tenzin Rinpoche, we aim to distribute free of cost this bilingual edition to the general public. Likewise, it is our aspiration that this book will enhance spiritual enthusiasm among the readers.

Finally, we offer our sincere prayers for the continued significant service to the holy Dharma and humanity in general.

SAKYA GURU MONASTERY
GHOOM, DARJEELING



CONTENTS

Page No.

| | |
|-------------------------------------|----|
| <i>The Early Years</i> | 21 |
| <i>Scholastic Pursuits in Sutra</i> | 21 |
| <i>Studies in Tantra</i> | 23 |
| <i>Retreat</i> | 25 |
| <i>Monastic Administration</i> | 25 |
| <i>Written Works</i> | 28 |
| <i>Teachings</i> | 29 |
| <i>Iconography: Statues</i> | 31 |
| <i>Iconography: Paintings</i> | 31 |
| <i>Publications</i> | 32 |
| <i>Disciples</i> | 32 |
| <i>Parinirvana</i> | 33 |
| <i>Reincarnation</i> | 35 |

**The Inspiring Life Story
of
H. E. Sakya Khenchen Sangay Tenzin**

“mZed rNam Ngo-mTshar dad-pa’i Sa-bon”

“The Seed of Wonderful Faith”

His Eminence Khenchen Sangay Tenzin, who with incomparable kindness, possessing the three vows of Pratimoksha, Bodhichitta and Vajrayana, is the holder of Buddhism in northern Tibet and Noble Representative of the Buddha. He stands as a pillar of Buddhism. While it is impossible to express the totality and immensity of his deeds from his birth until his Parinirvana, what we will attempt in our ordinary view will be an abridged version.

In this concise account, we hope to respectfully present his illustrious life story and further inspire the reader to practice the Profound Dharma.



Khenpo Jigme Phuntsok, 76th Karmapa, seated at Sakya Guru Monastery,
Ghoom, Darjeeling. (1961)

The Early Years

In the year of the Wood-Dragon, corresponding to 1904, auspicious signs marked Khenchen Sangay's birth in Tibet's land of Sakya, fifty thousand yards to the north of Bodh Gaya. Sakya is the place prophesied by Buddha in the Sutra thus, "The so called syllables "sa" and "ka", "will be renowned initially". Furthermore, Sakya Pandita gives the poetical interpretation to the word "sa" & "skya" as "The Ground (earth = "sa") on which the quality of merit is being produced." "It is a stainless white (grey = "skya") because it abandons non-virtuous deeds". He lived with his parents until nine years old and then entered a life of monk hood at the tender age of ten. He was bestowed a Novice (*dge tsul*) vow by Khenpo Rinchen Gyaltsen, the then abbot of the Great Temple (*Lhakhang Chenmo*) in Sakya. Since then, he had many opportunities to study with many distinguished masters and progressively engaged himself in the religious practice of memorising all the ritual prayers in accordance to the rules of the Great Temple. Having memorised a vast corpus of scriptures, he appeared for the mandatory recitation examination before all the learned monks of the Great Temple (*Lhakhang Chenmo*) and gained great fame by virtue of his remarkable memory.

Scholastic Pursuits in Sutra

As a credit to his natural scholastic ability, he learnt the basic logical texts (such as "*The Collected Topics*" the manual of *Pramanavartika* of Acharya Dharmakirti) under the guidance of Ven. Lobpon Choe Woesser in a very short time span. Ever progressing towards more profound teachings, his philosophical studies continued in the Great Temple in Sakya and from there to other illustrious monasteries including Ngor E-wam Chodhen, Phenpo Nalanda,

Samye Tsuglakhang, Tanak Thupten Namgyal Ling, Bhodhong, Ja Shong and Draeyul Kyumo-tsal, the main monastery of Kunkhyen Sangye Phel.

In his study of the “Eighteen Texts” (*grags chen bcho brgyad*) of the Sakya tradition including *Abhidharma*, *Madhyamika* and other philosophies, he was not only committed to mere learning (theoretical or academic) but also dedicated to thorough investigation and applications for his daily practice. Through this uncommon capacity to reason and research, he became a great scholar, intensively learning both Sutra and Tantra from many great learned abbots and scholars including the Venerable Khenpo Thupden Sangpo of Drakypa in Kham province.

At the age of thirty seven, he took the highest ordination vow (*dGe slong*) in Nalanda in Phenpo within the precious lineage of the Great Temple (*Lhakang Chenmo*) of Sakya. He received this vow of the most virtuous endeavour from the lineage holder Zimhog Rinpoche. Zimhog Rinpoche carried the lineage from Khenchen Ngodup Yarphel and was assisted by Lobpon Tsedhong Rinpoche, the master of introducing the rules and regulations of the *Vinaya* Sutra. Since then, Khenchen Sangay Tenzin preserved, observed and treated the two hundred and fifty three vows (highest ordination vow) more precious than his own eyes.

At the Sakya Monastery, he took a grand examination on *A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*) commentary and also on the Ten Volumes of Scripture. Having thorough knowledge and understanding of these texts, he was granted the degree of *bKa' bchu pa*. He then undertook the examination of the “Six Different Categories of Treatises” according to the Sakya tradition and also successfully completed the examination for the “Eighteen Texts” (*grags chen bcho brgyad*), the core texts of his

tradition. Having become a learned expert through extensive research into the entire body of Sakya philosophy, he received the virtuous title of *Rab 'byjams pa* (highest degree offered under Sakya religious education) and in commemoration of this title, he was awarded both honour and gifts from the local government of Sakya province in Tibet.

Studies in Tantra

When he was forty years old, he received all the initiations, transmissions and explanations of the “Common Path and its Fruit” or *Lam 'bras tshogs bshad* from the then Throne Holder of Sakya order H.E. Sakya Ngawang Kunga Tenpai Gyaltzen Rinpoche. He received the initiations, transmissions and explanations of the “Seventy Two Root Tantric Teachings” (*zab chos rgyud sde bdun bchu rtsa*



Khenchen Sangay Tenzin with Kunga Shedrub Ling's first group of students. Darjeeling 1979.

gnyis) of the Sakyapa tradition from Ngor Khangsar Khenchen Rinpoche. Over a period of six months, he received the “Thirteen Golden Dharma” (*gser chos bchu gsum*) from the same master at Sisum Namgyal Ling Monastery in Tsedong. Subsequently, he mastered the texts of the two different Dharma Protectors *Gur* and *Zhal* (specially dedicated to the protection of the Sakyapa tradition). He received the initiations, transmissions, explanations and teachings on “Compendium of Sadhana” (*sgrub thabs kun btus*) numbering 14 volumes from Ngor Khangsar Zhabdrung Tenzin Nyingpo in the Sakya Palace of Drolma Phodrang. Then he received the three Vajrayogini teachings (*dmar-po skor-gsum*) and all initiations for the gods of wealth including the White Mahakala. Irrespective of lineage and sect, he studied and received initiations, transmissions and explanations from a broad range of accomplished and respected lamas across the vast expanse of Tibet.

After coming into exile he received teachings from Dudjom Rinpoche of the Nyingma sect. Initially, he received the “Treasury of Precious Teaching” (*Rin-chen gter mdzod*) at Kalimpong and again at Yiga Choeling Monastery, now popularly known as Old Ghoom Monastery in Darjeeling; where he received the initiation of “Eight Different Meditation Systems” (*sgrub-chen bka'rgyad*). In the holy city of Varanasi, he received once again the complete teachings of “Common Path and its Fruit” (*Lam-'bras tsogs-bshad*) from His Holiness Sakya Trizin Rinpoche. In 1980, he received the unique complete tradition of the “Uncommon Path and its Fruit” (*Lam 'bras slob-bshad*) from His Holiness Sakya Trizin Rinpoche at Thupden Namgyal Ling, the main monastery of Sakya at Puruwala in the state of Himachal Pradesh. At that time, he also received many teachings from His Eminence Chobgye Trichen Rinpoche and His Eminence Ngor Luding Khenchen Rinpoche.

He also received other major initiations like Kalachakra, Avolokiteśvara initiations etc. from His Holiness the Fourteenth Dalai Lama at Bodh Gaya in 1985. Then again in Dharamsala, he received the major initiations of Guhaya Samaja (*gsang ba 'dus pa*) the transmission and explanation of the “Great Path of Tantricism” (*sngags-rim chen-mo*) and the oral transmissions of *bla ma lnga bcu pa* and *sdom pa nyi shu pa* from His Holiness the Dalai Lama.

Retreat

As an accomplished practitioner in Tibet, the revered Khenchen Sangay Tenzin undertook the “Great Retreat of Vajrapani” (*phyag na rdo rje*), the conqueror of evils at Sakya. Then in one hermitage of Jetsun Drakpa Gyaltsen in a place called *rdo-rje brag*, he accomplished the “Great Retreat of Hevajra.” He completed extensive retreats on Mahakala, White Tara and Amitabha too and in the special hermitage of Sakya Pandita, he undertook a meditation retreat on Manjushri. He practiced meditation retreats on Vajrayogini in Ngor E-wam Chodhen, Nalanda in central Tibet, Samye, Yamalung, Draeyul and Kyumoetsal. Near Bha-yul Khempalung in Khumbhu Tarpoche, he completed one special meditation on “Dakini Kurukulla” as a part of the “Thirteen Golden Dharma” (*gser chos bhcu gsum*) unique to the Sakya tradition. During this particular meditation, he experienced many different visions which cannot be openly discussed according to the sacred vows of Tantricism.

Monastic Administration

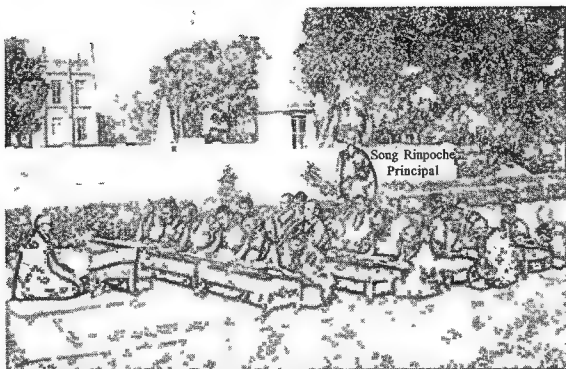
Following the advice of his Guru, Ngor Khenchen Ngawang Lodro Shenphen Nyingpo, he became the abbot of Ngor E-wam Chodhen monastery for three years. In Ngor E-wam Chodhen, he not only directed the rituals but also actively engaged in teaching

Buddhist philosophy. Then he was appointed the abbot of Tanak Thupten Namgyal Ling, the monastery founded by Gho'o Ramjampa Sonam Senge where he served for fifteen years as an abbot.

Following the invasion of Tibet in 1959 and the brutal suppression of the Tibetan people, he began preparations to seek refuge in neighboring India. He subsequently managed to escape even though it was extremely hard and dangerous to traverse the border passes since the People's Liberation Army had sealed the border.

One night in his dream, he had a clear vision of the image of Guru Padmasambhava Nangsi Zilnon, among many of the beautiful images made of clay in the private residence called Chokmophel within the Great Temple (*lhakhang chenmo*) area and it was prophesied thus: "If you recite the seven verse prayer continuously, you will be able to reach India". The next day at the first sign of dawn, with full of joy and happiness, he spoke about his dream to his attendants and said, "Now let us prepare to leave for India, Guru Padmasambhava assured us a safe passage for our escape without hesitation." After preparing the horses, they embarked on the journey from the northern part of Tibet. On the way they heard noises of fighting and shouting. Some members of their party saw conflicts between invading soldiers and Tibetan people but fortunately, they were not spotted by the Chinese forces. With the blessings of the Guru, they safely reached the border of Lō in Nepal at Ghung Thang La-mo and saw the famous footprint on the stone of Padmasambhava, the Great Tamer of Beings. Having remembered the prophecy made by Guru Padmasambhava in his dream, Khenchen Sangay Tenzin began to weep and immediately performed prayers for the sake of spreading Buddhism and for the benefit of all sentient beings.

After arriving in Lō Mustang, he was requested to stay a little



Khenchen Sangay Tenzin teaching at the Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi. Late 1960's

longer in the local Sakya Monastery. He politely refused and travelled on to Kalimpong to meet Kyabje Dujom Rinpoche who was then giving a teaching on “Treasury of Precious Teachings” *rin chen gter mdzod*.

In 1961, upon the suggestion of His Holiness Sakya Trizin Rinpoche, he came to Darjeeling and was appointed as abbot (*mkhan po*) in the Sakya Guru Monastery at Ghoom. From then on, he remained in this monastery in strict observation of the Vinaya codes of conduct. Maintaining Tibetan traditions, he upheld the bi-monthly confession ceremony for monks (*gso sbyong*) and re-established the Monsoon Retreat (*dbyar gnas*).

In 1979, he founded Kunga Shedrub Ling, the Institute of Higher Buddhist Studies for philosophical studies within the campus of the local Sakya monastery. Until his last breath, he maintained the traditions according to the Sakya discipline and taught philosophy

tirelessly. He was also involved in the wider community of the region dedicating his time to the *Tse Chu Kyidhu* association in Darjeeling and Kalimpong. He became an active member of this association overseeing the continued activity of prayer on every tenth day (*tshes bchu*) of each month of the Tibetan lunar calendar.

Written Works

Khenpo Sangay Tenzin is remembered for his wide array of accomplished written works. He wrote commentaries and clarifications on the following texts: - Sakya Pandita's root text *A Clear Differentiation of Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*), Kunkyen Gorampa's *Appendix on A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum kha-skong*), Shenphen Nyingpo's *Ornament of the Lama of Manjushri* (*sdom-gsum 'jam-dbyangs bla-ma'i dgongs-rgyan*), Ngor Khenchen Dorje Chang's *Commentary on Madhyamakāvātara* (*dbu ma 'jug pa'i sbyor tika*), *Madhyamakāvātara* of Acharya Chandrakirti, *Catūśataka or Four Hundred Verses of Madhayamika* (*dbu-ma bzhi- brgya-pa*) of Aryadeva, *Surlekha* (*bshes-pa'i spring-yig*) of Nagarjuna, Sakya Pandita's *Treasury of Reasoning* (*tshad-ma rigs-gter*) and *the Root of Vinaya Sutra* (*'dul-ba mdo-rtsa*).

He made a written clarification on the Summer Retreat, a commentary on the *Subhāshit Ratna Nidhi* (*sa-skya legs-bshad*) of Sakya Pandita and added suitable examples on the second chapter of *Kāvyaadarśa* (*snyan-ngag me-long*) of Acharya Dandi. In addition, he wrote several dedicational prayers of Sakya Pandita, composed an explanation on the lineage vows of all the abbots of the Great Temple (*Lhakhang Chenmo*) of Sakya and an appendix to the prayers of the Khon lineage. He composed dedicational prayers with ritual cake (*torma*) as a short supplication to Mahakala, offering



H. E. Sukya Minchun Sangay Tenzin (Front row seated 5th from right) with Kalon for Religion & Culture, Dzasa Kumbeling (Front row seated 6th from right), Cultural Secretary, Govt. of India (Front row seated 7th from right) with faculty and students of

Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi, India 1963.

prayers to Vajrayogini, the White Mahakala along with prayers of aspirations and dedication towards the flourishing of the Buddha dharma. He left behind these valuable works for the benefit of all sentient beings in this period of degeneration as their precious wealth.

Teachings

He imparted teachings according to the capacities of his disciples and audience giving thorough insights. Under instructions of the great Ngor-Khenchen, he gave the teaching on *Pratimoksha Sutra* (*so-thar gyi mdo*), Shantideva's *Bodhicaryavatara* (*spyod jug*), *Madhyamaka* (*dbu ma*), *Prajnaparamita* (*phar phyin*) and *A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*). He taught various major Buddhist philosophical literatures including the six voluminous works credited to Khenchen Ngagchoc and the important teachings of the five founding masters of the Sakya sect at the Institute of Higher Buddhist Studies in Tanak Thupten Namgyal Ling. He also taught Tibetan literature, poetry, grammar and lexicography.

While living at the Sakya monastery in Ghoom, he frequently imparted Dharma teachings, gave initiations, oral transmissions and spiritual instructions on the Law of Karma to a great number of monks and laymen as well. As mentioned earlier, these teachings were always conveyed according to the mental capacity and the interest of his disciples.

At the request of the Tibetan government in exile, he taught the monks gathered there irrespective of their sects, on major Buddhist philosophy and literature at the Buxa Religious Center in West Bengal. Accompanied by the abbots of the three great Gelug monasteries of Ganden, Sera and Drepung (*gdan sa gsum*) and other sects, he traveled to Mussoorie and Kushinagar for discussions concerning

how best to contribute towards the preservation of Lord Buddha's teachings. Following the successful deliberations on the above matter, he was appointed as main lecturer on Mool Shastra (*rgya gzhung*, the root text of Indian Buddhist philosophy) at the Central Institute of Higher Tibetan Studies in Varanasi, Uttar Pradesh.

After serving for several years in Varanasi, he returned to Sakya Guru Monastery at Ghoom. Here he resumed the task of teaching philosophical texts of Indian Pandits and Tibetan masters viz. *A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*, Skt. *Trisamvara pravedha*), the *Mulamadhyamika karika* (*dbu-ma rtsa-ba shes-rab*), *Madhyamikāvātara*, (*dbu-ma 'jug-pa*) and *Catūśataka* (*dbu-ma bzhi-brgya-pa*), *Prajnaparamita* (*phar phyin*), *Pramanashastra* (*tshad ma*), *Vinaya* (*'dul ba*), *Abhidharma* (*mngon pa*) and the six voluminous works of Khenchen Ngagchoe. He left a strong impression of gratefulness from his disciples by his lucid explanations through the application of various methods of teaching. To His Eminence Chobgyay Trichen Rinpoche, he taught *A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*) with the commentary that he had written.

He offered oral transmissions and teachings to His Holiness the Fourteenth Dalai Lama on the *Uncommon Three Different Stages of Meditation* (*sgom-rim thog-mtha' bar-gsum*) written by Kamalaśīla, *Devatīśaya-stotra* (*lha-las phul-byung gi bstod-pa*), *Viśeṣa-stava* (*khyad par jphags bstod*), his own commentary to Sakya Pandita's *Treasury of Reasoning* (*rigs-gter rang-'grel*) along with his commentary on *A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*).

His close and intimate relationship with great lamas including His Holiness the Fourteenth Dalai Lama was apparent in their

reverence towards him as a gifted guru. At the Institute of Higher Buddhist Studies in Puruwalla, Sakya College and Sakya Centre in Rajpur, he taught *The Illumination of Buddha's View (thub-pa dgongs-gsal)* and explained many other important Buddhist philosophical teachings. Upon completion of the transmissions of these rare teachings and in accordance with his dharmic responsibilities and aspirations, he gave many other sacred and rare oral transmissions and teachings.

Iconography: Statues

He implemented and executed the production of statues with single minded dedication and faith. A statue of Sakya Pandita, radiant with blessings was an object of devotion inseparable from the great lineage guru himself. In 1980, he requested a Tibetan handicraft centre to produce one hundred and fifty statues of Sakya Pandita. Once gilded and adorned in magnificent attire, he offered one hundred of these statues to the main Sakya monastery Thubten Namgyal Ling and distributed many to his gurus and lamas including His Holiness the Fourteenth Dalai Lama and His Holiness Sakya Trizin Rinpoche.

Iconography: Paintings

With utmost devotion, he executed the making of numerous gold painted Thankas including Sakya Pandita, White Tara, three Vajrayoginis (*dmarpa skor gsum*), Dakini Kurukulli, Sixteen Arhats (*gnas-brtan bchu-drug*), Protector Mahakala (*mgon-po gur and mgon-po zhal*) and all the other Dharma Protectors, the Merit Field (*tshogs zhing*) of the sacred lineage of *Lamdre*, the lineages of Vajrayogini and the lineages of Mahakala depicting Buddha Vajradhara in the centre. At Sakya Guru Monastery, Ghoom he made frescoes

of the Buddha and his two disciples (*Śariputra & Maha Muggalayana*), Indian Panditas, many erudite masters of Tibet, the hundred frescoes of three long-life deities - *Amitāyus, White Tara and Uṣṇīṣavijaya*. All of these holy images and statues continue to serve as the objects of worship and veneration for countless devoted people.

Publications

In addition to his iconographic feats, he printed and produced a great deal of scriptures. He made a wooden block for a prayer to Sakya Pandita and the *Commentary on A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye'i mchan 'grel*). After reaching India he printed his commentary on *Madhyamikāvatara* and an addition to *A Clear Differentiation of the Three Vows* (*sdom-gsum rab-dbye*) commentary. He wrote a commentary on *Subhāshit Ratnā Nidhi* (*sa-skya legs bshad*) of Sakya Pandita and published this root text along with his own commentary. It must be mentioned here that it will be too elaborate to give details of all the books that he had collected and published.

Disciples

Khenchen Sangay Tenzin's list of disciples extends to include so many learned lamas, scholars, teachers and ascetics including H.H. the 14th Dalai Lama, Pal Sakya Phuntsok Phodrang Kyabgon Dulzin Ngawang Kunga Trinlay Rinpoche, H.E. Chobgay Trichen Rinpoche, Geshe Sherab Gyaltsen Rinpoche of Switzerland, Dongthog Rinpoche Tenpai Gyaltsen, Tenche Tulku Tenzin Sangpo Rinpoche, Khen Rinpoche Tashi Tenzin of Mustang, Serdog Geshe Tenzin Lhundrup and Khensor Tashi Sangpo of Varanasi etc.

Parinirvana

Like his lineage forefathers, His Eminence Khenchen Sangay Tenzin followed the graded path to enlightenment with accomplishments of listening, contemplation, meditation etc. But it was the last deed of his life which transcended all others. When the thought of proceeding to the heavenly fields occurred in his mind, he gave up all the ordinary worldly affairs and began focusing only on the Tantric practice of the *Stages of Generation and Perfection*. When he was eighty-seven years old, he expressed indifference to any pursuit other than his own practice.

Finally, on the 24th day in the 9th month of the year of the Iron-Horse (year 2117-Tibetan calendar)corresponding to 11th November 1990, he attained *Parinirvana* (breathed his last).

He passed away for his disciples to witness the impermanent nature of worldly existence and as an inspiration to them to practice the dharma. For a period of nine days which lasted until November 19, (the 2nd day of the 10th month of the Tibetan lunar calendar), he remained in a state of profound meditation. Though his pulse had stopped, his body did not decompose and his mind remained concentrated in Clear Light.

At that time, the Most Venerable Tantric Master, His Eminence Chatral Rinpoche of the Nyingma sect entered into a state of meditation to examine the sacred body. After the nine-day period, at nine o'clock in the morning, Venerable Khenchen Sangay Tenzin freed himself from his meditative state, passing the fluids of Bodhichitta with a heavier quantity of white than red.

During this event, rainbows were seen above the monastery and both the outside and inside of his room was filled with the perfume of flowers, the scent of his morality. The head of the monastery, his

attendants, relatives, and other dignitaries, having witnessed that he was not an ordinary person but a highly attained spiritual master, were moved by his accomplishments. When Chadral Rinpoche completed his meditation, special prayers were offered with religious instrumental accompaniments and the sacred body anointed with holy water. Under the direction of Chadral Rinpoche, a stupa befitting the eminence and stature of the departed Rinpoche was built.

Once everything was prepared, His Eminence Chatral Rinpoche brought incense from the monastery and commenced the procession bringing the sacred body inside the temple followed by decorations and adornments of religious articles. He led the complete ritual and prayer ceremony. Following this grand ceremony, the lay devotees flocked in large numbers to receive blessings which continued for one and a half days.

At 8.00 a.m. on November 21st, (the 4th day of the 10th month of Tibetan calendar), His Eminence Chatral Rinpoche along with the assembly of monks presided over a Vajrasattva Fire Puja while another group of monks carried out the Maha Vairocana ritual. With the completion of these rituals, they offered the flame to the sacred body. For a period of one week, the monks continued in ritual and the general public recited prayers with offerings.

When this ceremony was completed, the doors of the newly consecrated stupa was opened, revealing the formations of Guru Padmasambhava, the orange dust of *sindhura*, five different colours of conch shells, relics and his skull, which had remained intact. Upon seeing this, everyone was deeply impressed filling them with even more stronger faith in the great departed soul and causing the seeds for the spiritual attainment of *Nirvana* to be sown. At the time of offering the flame to his sacred deceased body, his non-sectarianism was reflected in the manifestation of a clear bright sky illuminated by



H. H. the 14th Dalai Lama blessing Tenzin Kunga Gyaltzen Rinpoche
re his ecogripi

the coloured light rays of arched rainbows. Most of the relics appeared blue in colour. His accomplishments of *Vajrayogini* were revealed in the *sindhura* and his realisation had crystallised forming natural images of Guru Padmasambhava. Though many of these sacred articles were distributed to his faithful disciples as objects of worship, most of the relics including the conch shells were placed inside the golden memorial stupa, which is kept inside the main temple in his monastery at Ghoom.

Reincarnation

At the time of the consecration and blessing of the golden memorial stupa, his followers made a fervent request to His Holiness Sakya Trizin Rinpoche for his quick rebirth. Thereafter, by traditional methods of verification, His Holiness Sakya Trizin selected a boy as the reincarnation of the previous Khenchen Sangay Tenzin.

H. H. Sakya Trizin in turn approached His Holiness the 14th Dalai Lama for further confirmation of Khenchen Sangay Tenzin's incarnation. His Holiness reconfirmed the same boy as the incarnation and named him Tenzin Kunga Gyaltsen Rinpoche. The new incarnation symbolically offered his first hair cut to H.H. the Dalai Lama and was ordained and blessed by him. He was enthroned initially on 18th May 1997 in Rajpur.

He returned to Ghoom for the formal grand enthronement ceremony in late 1997. In a brief span of time, he learned all the prayers and rituals very rapidly without much hardship. On June 23rd, 2001, i.e. the 1st day of the fifth Tibetan month in the Iron-Snake Year, he took the special examination on the elaborate and essential rituals and mudras of Maha Vairocana. On September 10th, 2003; i.e. the 15th day of the seventh Tibetan month in the Water-Sheep year, he completed the important ritual examination of Vajrakila.

Presently, he is pursuing his philosophical studies in the Institute for Higher Buddhist Studies at Rimbick in Darjeeling district. His persistent application towards learning philosophy demonstrates the continued mind stream of his illustrious predecessor.

May all sentient beings find peace and happiness.

May Peace prevail on Earth.





བདེ་བར་གཤེགས་པ་ས་སྐྱ་མཁན་ཆེན་སངས་བྱུང་བ་སྐྱན་འཛིན་རིན་པོ་ཆེ་དམ་པའི་

གདུང་རྟེན་གསེར་གདུང་ཆེན་མོ།

Golden Buddhisatva Stupa of Khenchen Sangay Tenzin Rinpoche



ཆོས་ལྷོ་

འཕྱོ་མགོན་ཆོས་རྒྱལ་འཕགས་པས་བོད་ཁྱི་འཁོར་བཙུ་གསུམ་ལ་མངའ་དབང་བསྐྱར་
སྐབས་ ༡༢༦༥ ལོར་དཔལ་ས་སྐྱའི་སྤུལ་བའི་ལྷ་ཁང་ཆེན་མོ་འདི་བཞེངས་པའོ།

THE GREAT SAKYA LHAKHANG CHENMO AT SAKYA, TIBET
FOUNDED BY DROGON CHOGYAL PHAKPA RULER OF ALL
TIBET IN YEAR 1265.